

स्वभावमिह योषितः BṛĀg. P. 6, 18, 39. पितुर्नियोगम् R. GORR. 2, 18, 49. सद्बुद्धिम् 51. पैतामहीमाज्ञाम् 5, 44, 17. वाक्यम् 6, 93, 14. 7, 59, 22. BṛĀg. P. 3, 14, 45. 4, 4, 19. 25, 56. 5, 4, 14. धर्मम् MBh. 3, 11686. 3, 990 (sig. 995). R. GORR. 2, 18, 23. 30, 30. 5, 7, 4. M. 6, 93. MBh. 3, 11683. द्विजाप्यानुमतानुवृत्तधर्म BṛĀg. P. 4, 20, 15 (= परंपराप्राप्त Comm.). अर्थधर्मो परित्यज्य यः काममनुवर्तते R. 2, 33, 13 (15 GORR.). पुरुषाणां च मार्कस्थ्यमनुवर्तताम् MĀRk. P. 29, 1. व्रतम् ÇĀṆK. zu BRH. Ār. UP. S. 321. वैष्णव्यम् Spr. 4626. शोकम् R. 4, 6, 13. क्रोधम् 6, 101, 16 (act.). गोत्रं यन्नानुवर्तते sich angelegen sein lassen HARIV. 2531. क्लेशम् ebend. अनुवृत्तस्त्वया भगीरथगृहे प्रसादः so v. a. an den Tag gelegt UTTARAR. 124, 3 (167, 10). बलं धर्मो ऽनुवर्तते richtet sich nach, hängt ab von MBh. 12, 4841. कृतः पुरुषकारस्तु देवमनुवर्तते 13, 316. स्वार्थस्तम् (कालम्) अनुवर्तते Spr. 3925. — 2) gerathen in, theilhaftig werden: सद्यो भयं नानुवर्तति सतः Spr. 5117. — 3) nach und nach besetzen, — erfüllen: तत्पुत्रपौत्रनसृषामनुवृत्तं तदत्तरम् BṛĀg. P. 4, 1, 9. — 4) intrans. a) erfolgen, hinterher sich einstellen, — erscheinen BṛĀg. P. 1, 15, 36. 7, 2, 47. स्पृहा मे ज्ञायते ऽत्यर्थं तुष्टिश्चाप्यनुवर्तते R. 3, 49, 8. अनुवृत्त BṛĀg. P. 1, 18, 6. निशायामनुवृत्तायाम् 3, 11, 28. — b) fort dauern BṛĀg. P. 3, 11, 23. Schol. zu Kap. 1, 19. SARVADARÇANAS. 115, 22. Geltung haben: अनिर्वेदा हि सततं सर्वार्थानुवर्तते Spr. 3475. fortgellen so v. a. aus dem Vorhergehenden zu ergänzen sein Comm. zu NĀJAS. 2, 1, 58. — c) sich benehmen gegen (loc.): तथा न संज्ञा कन्यायां पुत्रयोश्चानुवर्तते MĀRk. P. 77, 25. abwechselnd mit acc. und loc.: कथं स भगवान्नामो धातुन्वा स्वयमात्मनः । तस्मिन्वा ते ऽनुवर्तते (der Comm. fasst अनु als adv. hinterdrein) प्रज्ञाः पौराण्य ईश्वरे ॥ BṛĀg. P. 9, 11, 24. — d) heimkehren R. GORR. 2, 35, 40 wohl nur fehlerhaft für निवर्त्. — e) अनुवृत्त = वृत्त rund, voll: ऽमनोस्रज्ज्वा PAÑĀR. 3, 5, 14. — Vgl. अनुवर्तन fg., अनुवर्तिन्, अनुवृत्ति, कात्तानुवृत्त. — caus. 1) fortrollen —, weiterrollen lassen: एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः BṛĀg. P. 3, 16. — 2) med. (sich) schlicht hinstreichen: केशान् TBra. 1, 5, 5, 1. — 3) verfolgen lassen AV. 14, 10, 18. — 4) nachfolgen lassen, anreihen an (loc.) ÇĀṆK. Br. 10, 2. Ça. 3, 16, 12. ĀÇV. Ça. 5, 3, 11. — 5) aus dem Vorhergehenden ergänzen Schol. zu P. 1, 3, 63. 7, 1, 36. 8, 3, 12. — 6) hineinlegen, hinein thun in (loc.): स्थिरचरेष्वनुवर्तितंशः BṛĀg. P. 3, 31, 16. — 7) anwenden: स चतुर्षामुपायानां तृतीयमनुवर्तयन् R. 4, 54, 6. — 8) Jmd (acc.) anhalten zu (loc.): लोकं धर्मं BṛĀg. P. 4, 16, 4. — 9) vorsagen, versprechen: सावित्रीम् PĀr. GRH. 2, 3. besprechen Verz. d. Oxf. H. 269, b, 29. beantworten: पद्यद्वती ऽनुपुञ्जीत तत्तदेवानुवर्तयेत् MBh. 4, 105. — 10) Etwas geschehen lassen R. 5, 46, 16. Etwas gutheissen, beipflichten: वनवासकृता बुद्धिर्मम धर्म्यानुवर्त्यताम् R. 2, 24, 49. — 11) auf Jmdes Gedanken eingehen, Jmd zu Willen sein: अनुज्ञानुवर्तित (= सेवित Comm.) BṛĀg. P. 1, 10, 3. — 12) es Jmd (acc.) nachthun ÇĀṆK. zu BRH. Ār. UP. S. 104.

— समनु nachgehen, folgen, sich richten nach Spr. 4363. BṛĀg. P. 3, 11, 24. राजवृत्तं किल लोकः कृत्स्नः समनुवर्तते R. GORR. 2, 118, 9. सत्यम् R. SCHL. 2, 14, 8. प्रयोजनवतीं प्रीतिं लोकः समनुवर्तते 6, 82, 45. भूमिर्नद्यः u. s. w. कालं समनुवर्तते MBh. 3, 11231. 11233 (act.). folgen so v. a. gehorchen R. 5, 64, 17. folgen so v. a. die Folge von Etwas sein BṛĀg. P. 5, 6, 17. — caus. Etwas geschehen lassen R. 5, 46, 17.

— अयं aus der Lage kommen, sich verdrehen: ग्रीवां सुच. 4, 255, 19.

VI. Theil.

von Wege abkommen: पुग्यम् M. 8, 298. sich seitwärts wenden: सं-
निवृत्त्यापवृत्त्य (अपवृत्त्य ed. Bomb.) च MBh. 7, 1164. sich entfernen, sich
fortbegeben 1, 1784. रत्नांसि 13, 4384. RAgh. 6, 58, 7, 30. sich zur Seite be-
geben (?) R. ed. Bomb. 2, 53, 4. अपवृत्तं abgerutscht: सव्यापवृत्तं जटामण्ड-
लम् HARIV. 3046. 4440. R. 6, 93, 12. सायकं so v. a. abgeschossen 4, 54,
19. umgekippt: पदा शकटः BṛĀg. P. 2, 7, 27. abhanden gekommen: पि-
तृपैतामहे राव्यम् MBh. 7, 3077. Oesters fehlerhaft für अपवृत्तं (s. u. वर्त्
mit अप) absolvirt, z. B. घृषे विवृते ऽनपवृत्ते ÇĀṆK. Ça. 13, 4, 1. अपवृत्ते
कर्मणि GORR. 1, 9, 17. KĀT. Ça. 1, 3, 28. ĀÇV. Ça. 6, 13, 17. fehlerhaft für
उपवृत्त MBh. 5, 7164 nach der Lesart der ed. Bomb. MALLIN. zu Kir.
12, 50. Vgl. अपवर्त्त fg. — caus. 1) abwenden: अप तं वर्त्तय पथः RV. 2,
23, 7. तिर्यगपवर्तितदृष्टि MĀLATIM. 2, 15. — 2) dividiren: कुर्दिनामि द्वा-
दशभिरपवर्तितानि Comm. zu GAṆĪĀDEH. GRAHĀNĀJANĀDEH. 9. LĪLĀV. 4,
8. 15. auf einen kleinern Maassstab reduciren: इष्टापवर्तितता पृथ्वी
GOLĀDEH. 8, 12.

— व्यप sich abwenden: चेतः कथं कथमपि व्यपवर्तते मे MĀLATIM. 11, 15.
abstehen von (abl.) UTTARAR. 94, 5 (122, 11).

— समप caus. wegtreiben > उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्त्तयति वर्त्तिनिम्
RV. 10, 172, 4.

— अपि caus. hineinschleudern in (acc.): कर्त्तम् RV. 1, 121, 13.

— अमि 1) sich begeben —, kommen nach, zu (acc.): सकृन्नतिं वाज-
मभिवर्त्तस्व रथ ऀÇV. GRH. 2, 6, 5. संवत्सरः सर्वाणि भूतान्यभिवर्तते Ça.
Br. 8, 4, 4, 15. मथुराम् HARIV. 6442. वनम् R. GORR. 2, 43, 4. 73, 12. 7,
21, 9. ज्ञान्कवीमभिवृत्तायाः (सरत्वाः) sich ergiessend in R. SCHL. 1, 26, 10.
hinzutreten zu 2, 91, 37 (100, 36 GORR.). sich Jmd nähern, an Jmd heran-
treten: भार्याम् MBh. 1, 4486. चन्द्रमाः — रोहिणीं नाभ्यवर्तते HARIV. 12796.
2705. 4978 (act.). ये चैनमभिवर्त्तते याचितार इतस्ततः R. 1, 31, 7. 3, 31,
31. 52, 15. 4, 62, 13. 6, 99, 43. अतोस्त्वा मत्संभवा सौम्य धनौघैरभिव-
र्त्त्यते HARIV. 4482. losgehen auf Jmd (in feindlicher Absicht), über-
fallen, angreifen: दस्युन् RV. 5, 31, 5. MBh. 1, 4114. 3, 11518. 11722.
11963. 5, 7243. 6, 4. 2362 (act.). 2666. 9, 787 (act.). HARIV. 11043 (S. 791).
R. 6, 2, 48. 19, 19. intrans. sich herbewegen, herbeikommen: इत एव MĀRk.
98, 24. ÇĀK. 8, 23. 80, 3. MĀLATIM. 11, 7. PRAB. 13, 9. 20, 2. आरात् RAgh.
2, 10. sich hindbewegen: पतो यतो षट्पूरुषो ऽभिवर्तते ÇĀK. 23, v. 1. वक्रेषा
von einem Planeten BṛĀg. P. 5, 22, 14. in feindlicher Absicht herankom-
men: संधाममेवाभिमुखा अभ्यवर्त्तते R. 7, 27, 24. वा योद्धुमभिवर्तते 6, 4, 23.
पुद्गार्थम् 7, 27, 7. पुद्गाय 75, 41. संधामे 28, 7. स्पृष्टुं (यस्य ed. Calc.) राज-
सकृन्नापि — समरे नाभ्यवर्त्तते वेलामिव मर्कार्णवः MBh. 4, 578. sich hin-
wenden: तेषाम् मुखानि चाभ्यवर्त्तते येन याता तिलोत्तमा 1, 7707. दी-
र्घारणयानि दक्षिणां दिशमभिवर्त्तते sich hinstrecken, sich hinziehen nach
UTTARAR. 32, 18 (43, 2). über Jmd kommen so v. a. sich Jmds bemächti-
gen: शङ्खा मामभ्यवर्त्तते R. 5, 56, 143. — 2) überwinden: येनेन्द्रा अभिवा-
वृते RV. 10, 174, 1. 2. — 3) aufziehen (von Wolken) R. 2, 91, 25 (अभ्य-
वर्षत् ed. Bomb.) = 100, 22 GORR. sich erheben, beginnen: रथिनी रथि-
भिश्च संप्रहारा ऽभ्यवर्त्तते MBh. 4, 1050. anbrechen (von der Nacht) R.
2, 48, 26. 62, 19. 85, 14 (92, 23 GORR.). R. GORR. 2, 10, 6. संध्या 1, 29,
22. 2, 95, 23. sich erheben (von einem Geräusch u. s. w.): स्तुतिशब्दे
ऽभ्यवर्त्तते (व्यवर्त्तते ed. Bomb.) R. SCHL. 2, 65, 3. साधु साधिति शब्दश्च अ-

48